धूरि-धुंध-मंडित रबि-मंडल अकबकात अलकेस अखंडल।
थंभि न सकत भूमिधर दिक्करि दुट्टत रह फटत नभ चिक्करि ॥६०॥

(छप्पय) start here

चिक्करि-चिक्करि उठहिं दिक्क-दिक्कार करानन जुत।
खल-दल भज्जत लज्जि तज्जि हय-गय दारा-सुत।
संकत लंक अतंक बंक हंकनि हुड़्कारत।
डग-डग डुल्लत गब्बि सब्ब पब्बयनि सिधारत।
तहँ पद्माकर कबि बरन इमि नृप अनूप गिरि जब चढ़्यउ।
तब अमित अराबो अखिल दल इक्क बार छुट्टत भयउ ॥६१॥

(हरिगीतिका)

छुट्टत भयउ इक बार जब सब तोपखानो तड़किकै।
टुट्टत भयउ गढ़-बृंद गढ़पति भाजि गे सब सड़किकै।
पृथु-रित्ति नित्त सुबित्त दै जग जित्ति कित्ति अनूप की।
बर बरनिये बिरदावली हिंमतबहादुर भूप की ॥६२॥

(भुजंगप्रयात)

तुपक्कैं तपक्कैं धड़क्कैं महा हैं प्रलै-चिल्लिका-सी झड़क्कैं जहाँ हैं।
खड़क्कैं खरी बैरि-छाती भड़क्कैं सड़क्कैं गए सिंधु मज्जै गड़क्कैं ॥६३॥
चलै गोल-गोली अतोली सनंकैं मनो भौंर-भीरैं उड़ातीं भनंकैं।
चढ़ी आसमानै छई बेग्रमानैं मनो मेघमाला गिलै भासमानैं ॥६४॥
गिरैं ते मही मैं जहीं भर्भरा कै मनो स्याम ओरे परैं झर्झरा कै।
चलैं रामचंगी धरा मैं धमंकैं सुनें तैं अवाजैं बली बैरि संकैं ॥६५॥
तमंचे तहाँ बीर-संचे छुड़ावैं कसे बंक बानै निसानै उड़ावैं।
छुटी एक कालैं बिसालैं जजालैं जगी जामगीं त्यों चलैं ऊँटनालैं ॥६६॥
गजैं गाज-सी छूटतीं त्यों गनालैं सुनैं लज्जतीं गज्जती मेघमालैं।
चली मूँगरी उच्च ह्वै आसमानै मनो फेरि स्वर्गं चढ़े दिग्घ-दानै ॥६७॥
परी एक बारैं धमाधम धरा है मनो ये गिरी इंद्रहू की गदा है।
किधौं ये बिमानन्न की चक्र झुंडैं परी टूटि हैं कै बिराजैं भसुंडैं ॥६८॥
छुटी है अचाका महाबानवाली उड़ी है मनो कोपिकै पन्नगाली।
खरी कुहकुहाती जुड़ाती नहीं हैं चली हैं अनंतैं दिगंतैं दही हैं ॥६९॥

चली चहरैं त्यों मचे हैं धड़ाके छड़ाके फड़ाके सड़ाके खड़ाके।
छुटे सेरबच्चे भजे बीर कच्चे तजैं बाल-बच्चे फिरैं खात दच्चे ॥७०॥
छुटे सब्ब सिप्पे करैं दिग्घ टिप्पे सबै सत्रु छिप्पे कहूँ हैं न दिप्पे।
कराबीन छुट्टैं करैं बीर चुट्टैं करी-कंध टुट्टैं इतै-उत्त बुट्टैं ॥७१॥
चली तोप धाँ-धाँ-धधाँ-धाँइ जग्गी धड़ाधड़-धड़ाधड़ धड़ा होन लग्गी।
झड़ाझड़ झड़ा बीर बाँके छुड़ावैं भड़ाभड़-भड़ाभड़ भड़ा त्यों मचावैं ॥७२
दगो यों अराबो सबै एक बारैं किधौं इंद्र कोप्यौ महाबज्र डारैं।
किधौं सिंधु सातौ सबै भर्भराने प्रलै-काल के मेघ कै घर्घराने ॥७३॥
सुनौं जो अवाजैं सबै बैरि भाजैं न लाजैं गहैं छोड़ि दीन्ही समाजैं।
तजैं पुत्र-दारैं सम्हारैं न दे हैं गिरैं दौरि उट्ठैं भजैं फेरि जेहैं ॥७४॥
उलत्थैं पलत्थैं कलत्थैं कराहैं न पावैं कहूँ सोक-सिंधून थाहैं।
तजैं सुंदरी त्यों दरी मैं धसे हैं तहाँ सिंह बघ्घान हू ने ग्रसे हैं ॥७५॥

(छप्पय)

छिति अति छज्जिय अग्र छत्र-छाहन छबि छक्किय।
चहुँव चक्क धकपक्क अरिन अकबक्क धरक्किय।
इक्क दुवन तजि धरनि सरन तुव चरन सु तक्किय।
हय गय पयदल छोड़ि छोड़ि सुख-सागर नक्किय।
जगमग प्रताप जग्यव उमगि उथल-पथल जल-थल गयउ।
नृप-मनि अनूप गिरि भूप जब निज दल-बल हंकत भयउ ॥७६॥ finish

(हरिगीतिका)

हंकत भयउ निज दल सकल ह्वै करि भटन की पिट्ठि पै।
हर हरषि भाषत तहाँ राखत डिट्ठि अरि की डिट्ठि पै।
पृथु-रित्ति नित्त सुबित्त दै जग जित्ति कित्ति अनूप की।
बर बरनिये बिरदावली हिंमतबहादुर भूप की ॥७७॥
हिंमतबहादुर नृपति यों करि कोप आगे कों चल्यो।
रन-धीर बीरन संग लै जिन मान मीरन को मल्यो।
जिरही सिलाही ओपची उमड़े हथ्यारन कों लिये।
बनि बेस केसरिया अरिन कों निरखि अति हरषे हिये ॥७८॥

[७७] जम (दीन); जग।